समीक्षा

2007-2008

कुमाऊँ कारीगर समिति

ग्राम – कालिका ,पोस्ट आफिस –कालिका , रानीखेत, अल्मोड़ा, पिन –263 645
उत्तराखण्ड ,फोन न. : 05966 – 221516, 222298

परिचय

कुमाऊँ कारीगर समिति ग्रामीण नवयुवकों का एक संगठन है। इसका पंजीकरण 6 अक्टूबर 2001 में सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 ए के अर्न्तगत किया गया हैं।

सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में वैकल्पिक तकनीकि का महत्वर्पूण स्थान हैं। परन्तु प्रशिक्षित एंव कुशल कारीगरों के अभाव में उचित क्रियान्वयन न होने के कारण इसका लाभ ग्रामीण समुदायों तक नही पहुँच पाता हैं। इस सोच को मददेनजर रखते हुये कुशल कारीगरों की एक समिति का गठन करने का प्रयास **पान हिमालयन ग्रासरूटस डवलपमेंट फाउन्डेशन** द्वारा किया गया, इस प्रयास के फलस्वरूप **कुमाऊँ कारीगर समिति** का गठन हुआ।

वर्तमान में कुमाऊँ कारीगर समिति एक स्वावलम्बी स्वैच्छिक समिति के रूप में ग्रामीण समुदाय के साथ मिलकर ग्रामीण विकास कार्यक्रमों को क्रियान्वयन कर रही हैं। समिति का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण उत्तराखण्ड राज्य है ।

समिति का मुख्य कार्यालय ग्राम कालिका ,जिला अल्मोड़ा में स्थित हैं। तथा अपने कार्यक्रमों के उचित संचालन एवं समन्वयन हेतु तीन अन्य क्षेत्रीय कार्यालय गरूड़, सुनोली एवं देवलीखेत में स्थापित किये है। इन क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा समुदाय के माध्यम व समन्वय से उपयुक्त तकनीकि का प्रचार-प्रसार विभिन्न कार्यक्रमों में आवश्यकतानुसार संचालन किया जा रहा है।

लक्ष्य

समुदाय की आवश्यकतओं एव सहभागिता के आधार पर उपयुक्त तकनीकि के माध्यम से प्राकृतिक संशाधनों का सदुपयोग एवं प्रबन्धन कर उनके जीवन स्तर में गुणात्मक सुधार लाना।

उद्देश्य

- समुदाय आधारित संगठनों एवं स्वयं सहायता समूहों का प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन हेतु क्षमता विकास कर, उनकी कार्ययोजना के आधार पर कार्यक्रमों को करने हेतु प्रेरित करना।
- पारम्परिक जल स्रोतो का संरक्षण करने हेतु ग्रामीण समुदायों को प्रेरित करना।
- पेयजल की समस्या के समाधान के लिए उपयुक्त कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- जल स्रोतों को दूषित होने से बचाने के लिए पर्यावरणीय स्वच्छता के अन्तर्गत शौचालय निर्माण करने हेतु समुदाय को प्रेरित करना।
- बायोगैस निर्माण के प्रचार से ग्रामीण समुदाय को वैकल्पिक उर्जा का साधन उपलब्ध कर जंगलों पर बढ़ते दबाव को कम करना।
- जल स्रोतों पर बढ़ते दबाव को कम करने के लिए बरसाती पानी संग्रहण टेंक की तकनीकि से समुदाय को प्रेरित करना।
- जंगलों के अनुचित दोहन एवं प्रबन्धन से पर्यावरण एवं जीवन स्तर पर पड़ रहें दुष्प्रभावों के प्रति लोगो को जागरूक करके गधेरा बचाओं अभियान का संचालन कर जैव विविधता संरक्षण कार्यक्रमों को क्रियान्वयन करना ।

- उत्तराखण्ड के पर्वतीय ग्रामीण क्षेत्रों में कारीगरी/दस्तकारी के माध्यम से स्थानीय नवयुवकों के कौशल में वृद्धि कर स्वरोजगार के अवसर प्रदान करना।
- उपयुक्त तकनीकी के प्रचार प्रसार से सरकारी नीतियों में बदलाव लाने हेतु प्रयास करना।

गधेरा बचाओ अभियान

प्राकृतिक संसाधनो का सामूहिक प्रबंधन उत्तराखण्ड के ग्रामीण जीवन की विशिष्ट पहचान रही है। वर्तमान में जल ,जंगल ,जानवर एवं जमीन के संकुचन से पर्वतीय समुदाय के जीवन शैली एवं आजीविका के स्तर में निरन्तर बदलाव हो रहा हैं। ऐसी स्थिति में सुधार की अपेक्षा तब तक सम्भव नही हैं जब तक कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन कर उनके तीव्र ह्रास पर अंकुश न लगाया जाये।

पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों का समुदाय के जीवन चक्र से अर्न्तसम्बन्ध को मद्देनजर रखते हुए, अल्मोड़ा जनपद के गगास नदी के जलागम क्षेत्र में गधेरा बचाओ अभियान की शुरूआत पिछले तीन वर्षो से की गई जिसका मुख्य उद्देश्य सभी गधेरों में गिरते जल स्तर के प्रतिकूल प्रभावों को, समुदाय की सहभागिता से प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं सर्वधन कर, भविष्य में उनकी आजीविका एवं खाद्य सुरक्षा में सकारात्मक सुधार करना है। इस घाटी का क्षेत्रफल 500 वर्ग कि0मी0 है जिसमे 373 गॉवों के 23,000 परिवारो की 1,06,500 जनसंख्या रहती है, सम्पूर्ण गगास जलागम में 14 छोटे बड़े मुख्य गधेरे हैं। समीक्षा वर्ष के दौरान इनमे से **दुसाद,कनाड़ी,खीरो एंव पनाई** गधेरों में इस अभियान का विस्तृत रूप से संचालन किया गया। इस अभियान के क्रियान्वयन करने का दायित्व समुदाय द्वारा त्रिस्तरीय ढ़ाचे (स्वंय सहायता समूह, गधेरा बचाओ समिति, गधेरा बचाओ मंच) के आधार पर किया जा रहा है, जिसका विवरण निम्नवत है :

क्रम सं	गतिविधियॉ	2005–06	2006–07	2007–08	कुल
1	सर्म्पक गॉव की संख्या	50	–		50
2	स्वंय सहायता समूह गठन	50	24	–	74
3	गधेराबचाओ समिति	14	11	1	26
4	गधेरा बचाओ मंच	–	01	–	01
5	ग्राम कोष	80,000	1,60,000	1,79,730	4,19,730

गधेरा बचाओ अभियान को सार्थक एंव व्यापक बनाने के लिए, सुखते जल स्रोतों,नौलों,धारों ,गधेरो एंव नदियों को पूर्नजीवित करने के अभियान को निरन्तरता के लिए पद यात्रा का संचालन किया गया, जिसमे गगास घाटी के लगभग 400 लोगों ने प्रतिभाग किया। इस वर्ष भी इस सोच को आगे बढ़ाने एव मजबूती प्रदान करने के लिए जल दिवस का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों के संचालन में दुसाद गधेरा बचाओ मंच की भूमिका सराहनीय रही। इस दौरान यह भी निर्णय लिया गया कि सभी जल स्रोतो को पूर्नजीवित करने हेतु वन विभाग के साथ सामजंस्य बनाते हुये आरक्षित वनों में जल सर्वधन के कार्य कराने हेतु उचित रणनीति तैयार करना।

- **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन कार्यक्रम**

कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा गगास जलागम क्षेत्र के 4 गधेरों के लगभग पचास गांवों में वृहद रूप से समाकेतिक ग्रामीण विकास कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा हैं। इन सभी गधेरों में जल की विकट समस्या को मदद्देनजर रखते हुए जलस्रोत संरक्षण एवं संवर्धन कार्य का संचालन किया जा रहा हैं। इस कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए 17 ग्रामीण पौधशालाओं की स्थापना स्वंय सहायता समूह एंव व्यक्तिगत कास्तकारों द्वारा की गई। पौधशालाओं में स्थानीय मॉग के आधार पर चौड़ी पत्ती के लगभग 25 प्रजातियों के 2,05,000 पौधे तैयार किये गये।

समीक्षा वर्ष के दौरान 15 गधेरा बचाओ समितियों द्वारा माईक्रोप्लान के आधार पर स्थानीय लोगों की सहभागिता से मानसून के दौरान गॉव की सामूहिक भूमि पर चौड़ी पत्ती के 1,10,867 चारा, घास एंव झाड़ी प्रजाति के पौधों का रोपण लगभग 285 हैक्टेयर में किया गया। इसके साथ-साथ शीतकालीन वृक्षारोपण में दुसाद गधेरे के दोनो छोरो पर 507 उत्तीस के पौधों का रोपण समस्त गॉव के सहभागिता से किया गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न गॉव के समुदायिक वन भूमि में नमी वाली जगह में 85,200 (213 किलो ग्राम) बॉज के बीज बोया गया। मृदा संरक्षण एवं जल संवर्धन के लिए 337 नये खालों का निर्माण किया गया तथा 10,964 मीटर कन्टूर ट्रेन्चों का भी निर्माण किया गया ।

समुदायिक वन प्रबन्धन कार्यक्रम के अर्न्तगत समुदायिक वन भूमि से घास का उत्पादन भी निरन्तर बढ़ रहा है, इससे जानवरों के लिए चारे की पर्याप्त पूर्ति हो रही है। कुछ गॉव जैसे कि मल्ला एंव तल्ला सतीनौगॉव में अधिक घास का उत्पादन होने से समुदाय द्वारा पूर्ण रूप से उपयोग नहीं किया जा सका। समीक्षा वर्ष में 12 गॉव की सामुहिक भूमि से 4,609 गटठा (30 किलो लगभग प्रति गटठा) घास का उत्पादन प्राप्त हुआ। इस घास उत्पादन के वितरण की प्रणाली सभी की जरूरतो को मददेनजर रखते हुये बनाई।

गगास जलागम क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि द्वारा समुदाय को जाग्रत करने के लिये समुदाय द्वारा ही वर्षा, तापमान, वाष्पीकरण, एंव गधेरों में जल स्राव मापन करने की प्रक्रिया की शुरूआत 9 स्थानों पर किया जा रहा है।

उपरोक्त सभी गतिविधियों के संचालन में गधेरा बचाओ समितियों का विशेष योगदान रहा है, समितियों द्वारा अपने गॉव में बैठकों का आयोजन कर आपसी सामंजस्य से पारदर्शिता पूर्वक निर्णय लिये गये एवं प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में समानता जैसे मुददों पर विशेष ध्यान दिया गया। सामुदायिक कार्य हेतु समुदाय द्वारा लागत का 20 प्रतिशत अंशदान के रूप में योगदान किया गया।

- **आजीविका एंव खाद्य सुरक्षा**

  समीक्षा वर्ष के दौरान आजीविका एंव खाद्य सुरक्षा के पहलूओं को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न आय वृद्वन के कार्यक्रम का संचालन ग्रासरूटस एंव महिला उमंग समिति के सहयोग से करने का प्रयास किया। जिसका विवरण निमन्वत है :

- **फलदार पौधों का वृक्षारोपण**

  समुदाय की आयवृद्वि में फलदार पेड़ों की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है, इस उददेश्य के अनुसार कनाड़ी व दुसाद गधेरे में स्थापित पौधशालाओं में फलदार पौधों को तैयार कर 5,300 पौध का रोपण किया गया। जिसमे मुख्य रूप से अखरोट, पहाड़ी नीबू, कागजी नीबू,माल्टा, संतरा आदि प्रजाति के पौधे थे।

- **फलदार पौधों की कलम लगाना**

  दुसाद एंव कनाड़ी क्षेत्र में मेहल के पेड़ो की अधिकता होने से उसमे उन्नत प्रजाति जैसे नाशपती, पलम, खुमानी की कलम लगाई गई, ताकि भविष्य में कास्तकारों को इसका लाभ मिल सके। यह व्यक्तिगत पेड़ों के साथ साथ दो सामुदायकि वन भूमि में भी लगाई गई। व्यक्तिगत भूमि में 155 कास्तकारों ने 1194 उन्नत किसम की कलम लगाई, और सामूहिक भूमि के दो प्लाटों में 100 पेड़ों में नाशपती की कलम लगाई गई।

- **वर्मी कम्पोस्ट से जैविक खाद तैयार करना**

  मिटटी की उपजाऊ शाक्ति को बढाने के लिए वर्ष के दौरान केचुएं से खाद तैयार करने की विधि पर स्वंय सहायता समूह को प्रशिक्षण दिया गया, और केचुओं को लोगों के द्वारा अपने पारम्परिक गोबर के ढेर में ही डाला गया है, ताकि यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहे। वर्ष के दौरान इस विधि से 20 गॉव में 326 कास्तकारो ने वर्मी कम्पोस्ट तैयार किया।

- **अतिरिक्त कृषि उत्पाद का विक्रय**

  समुदाय द्वारा उत्पादित पारम्परिक फसल (मडुवा,झिगोंरा,दाले आदि) यदि स्वंय की आवश्यकता से अधिक उत्पादन होने पर कास्तकार को बाजार में विक्रय करने के लिए दुसाद गधेरा बचाओ मंच ने कुमाऊँ कारीगर समिति के साथ पहल की है। यदि इस उत्पाद में जैविक खाद का प्रयोग किया जाये तो इसका मूल्य कास्तकारों को अधिक मिल सकता है। इसके लिए समीझा वर्ष में उत्तराखण्ड जैविक उत्पाद परिषद के साथ सर्म्पक कर कार्य प्रारंभ कर दिया गया है।

पेयजल

पर्वतीय क्षेत्रों में वनों के दोहन एवं अनुचित प्रबन्धन से पारंम्परिक जल स्रोत, नौलों एंव धारों के सूख जाने से ग्रामीण समुदायों की पेयजल की समस्या दिन प्रतिदिन विकट होती जा रही हैं। इस समस्या को कम करने के लिए कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा रिसावदार कुएँ/हैन्डपम्प का निर्माण एक विकल्प के रूप में किया जा रहा है। इस वित्तीय वर्ष में कुमाऊँ एवं गढ़वाल के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में 42 रिसावदार कुऑ/हैण्डपम्पों का निर्माण कार्य किया गया।

इन रिसावदार कुओं के निर्माण से 840 परिवारों की लगभग **4,620** जनसंख्या को पीने के लिए स्वच्छ जल प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम के द्वारा ग्रामीण महिलाओं का पानी लाने पर लगने वाले समय की बचत के साथ–साथ स्वच्छ पानी की उपलब्धता में भी वृद्धि हुई हैं, जिससे परिवार के स्वास्थ पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

इस तकनीकी से लाभान्वित समुदाय ने इसकी कुल लागत का 20 प्रतिशत योगदान नगद/श्रमदान द्वारा किया और इसके रख–रखाव की सम्पूर्ण जिम्मेदारी भी ली। भविष्य में हैन्डपम्पों के रख–रखाव हेतु लाभान्वित परिवारों में महिला समूहों/गधेरा बचाओं समितियों का गठन भी किया गया हैं। इस दौरान इन समूहो को कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा पर्यावरणीय स्वच्छता एंव स्वास्थ्य के समबन्ध पर आधारित प्रशिक्षण दिये गये जिससे इनमें काफी जागरूकता आयी हैं।

बरसाती जल संग्रहण टैंक

कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा अपने कार्यक्षेत्र में पानी की समस्या को मुख्य प्राथमिकता दी हैं। इन क्षेत्रों में पानी की विकट समस्या को ध्यान में रखते हुए बरसाती जल संग्रहण टैंक के विकल्प का प्रचार-प्रसार किया गया। इसी आधार पर बरसाती टैंको का निर्माण 8 से 10 हजार लीटर क्षमता तक कराया जा रहा हैं। इस वित्तीय वर्ष में 129 व्यक्तिगत बरसाती जल संग्रहण टैंकों का निर्माण किया गया। प्रति टैंक की कुल लागत रू. 18,000 से 22,000 तक है तथा इस लागत का 55 प्रतिशत लाभार्थीयों का स्वंय अंशदान रहता है।

जल गुणवत्ता जॉच कार्यक्रम

विगत वर्षो की भांति समीक्षा वर्ष के दौरान भी जल गुणवत्ता जाँच का कार्य जारी रहा। चूँकि संस्था मुख्य रूप से जल संवर्धन, पेयजल एवं स्वच्छता का कार्य कर रही हैं एतएंव अपने कार्यक्षेत्र के जल स्रोतो एवं रिसावदार कूओं का प्रतिवर्ष दो बार जल गुणवत्ता जाँच कार्य किया जा रहा हैं। इस वित्तीय वर्ष में 84 गांवों के 190 स्रोतों के 279 नमूनों के जल गुणवत्ता की जाँच की गयी , तत्पश्चात सम्बन्धित समुदाय को इसके परिणाम के बारे में अवगत कराया गया तथा दूषित जल के निवारण के लिए समुदाय को बैठको के माध्यम से जागरूक किया गया।

पर्यावरणीय स्वच्छता

पेयजल की गुणवत्ता एवं पर्यावरणीय स्वच्छता को बनाये रखने के लिए ग्रामीण समुदायों को शौचालय निर्माण हेतु प्रेरित किया जा रहा हैं। शौचालय निर्माण की मांग दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही हैं। इसी क्रम में कुमाँऊ कारीगर समिति के कुशल कारीगरों द्वारा गॉवों में प्रशिक्षण कार्यक्रम चला कर समुदाय को दो गढ्ढों के सोख्ता पिट वाले जलबन्द शौचालयों का निर्माण करने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा हैं। प्रति शौचालय की कुल लागत लगभग रूपया 10,000 तक हैं एवं इस लागत का 75 प्रतिशत लाभार्थी का अंशदान रहता हैं।इस समीक्षा वर्ष के दौरान समिति ने 552 शौचालयों का निर्माण कुमाँऊ, गढ़वाल के विभिन्न ग्रामों में किया गया।

- **निर्मल गधेरा घोषित अभियान** : दुसाद गधेरा बचाओ मंच द्वारा 07–08 में सम्पूर्ण गधेरे को निर्मल गधेरे बनाने की धोषणा की गई, इसके अर्न्तगत दुसाद के कुल 21 गॉव के 850 परिवारों में से केवल 135 परिवारों को शौचालय व्यवस्था से जोड़ा जाना है। अधिकांशतः जो भी परिवार शौचालय से वंचित है उनकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर होने से मंच के द्वारा अपने–अपने गॉव में आर्थिक सहायता बढ़ाकर इनके निर्माण हेतु वचनबद्व है।

वैकल्पिक ऊर्जा

ग्रामीण समुदायों के लिए ईधन हेतु लकडी एंव अन्य संसाधन की उपलब्धता एक समस्या का रूप धारण कर चुकी हैं। जंगलों के संकुचन के कारण महिलाओं और बच्चों को लकड़ी लाने के लिए काफी दूर तक जाना पड़ता हैं, जिससे उनका कार्यभार सोचनीय स्तर पर पहुँच गया हैं ।

दूसरी ओर ईधन हेतु अन्य विकल्पों के कमी से जंगलो पर दबाव भी बढ़ता जा रहा हैं और इस समस्या को मद्देनजर रखते कुमाँऊ कारीगर समिति ने बायोगैस को एक वैकल्पिक उर्जा के रूप में उपयोगी पाया हैं। इस विकल्प से महिलाओं के कार्य बोझ में कमी के साथ-साथ धुएं से होने वाली बीमरियों में भी अंकुश लगा है।

समीक्षा वर्ष में ईधन की समस्या के समाधान हेतु 174 बायोगैस संयंत्रो का निर्माण कुमाऊँ कारीगर समिति के कुशल कारीगरों द्वारा किया गया। प्रति बायोगैस की कुल लागत रू. 15,000 है, जिसमे से लाभार्थी परिवार का अंशदान 60 प्रतिशत है तथा लागत का 40 प्रतिशत उत्तराखण्ड सरकार एवं समिति द्वारा अनुदान दिया जा रहा है। बायोगैस संयत्र के रख–रखाव हेतु कुमाँऊ कारीगर समिति एंव सहयोगी संस्थाओं के कार्यक्षेत्र में समय-समय पर कार्यशाला आयोजित की गई है।

पर्यावरण की द्वष्टि से पुरे विश्व में आज जो ग्लोबल वार्मिग (जलवायु परिर्वतन) की चिन्ता हर मंच में उठाई जा रही है, इस परिर्वतन में मिथेन गैस सबसे अधिक मात्रा में होना एक खतरा बनते जा रहा है। बायोगैस में इसी गैस को ईधन के रूप मे प्रयोग किया जाता है। यदि इस कार्यक्रम को बढ़वा मिलता है तो यह छोटा सा कदम इस ग्लोबल वार्मिग के एक कारक को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा। इस समस्या को मददेनजर रखते हुये कुमाऊँ कारीगर समिति भविष्य में भी इस कार्यक्रम को व्रहद रूप में फैलाने का प्रयास करती रहेगी।

सरकारी विभागों के साथ कार्यक्रमों का संचालन

समीझा वर्ष के दौरान कुमाऊँ कारीगर समिति एंव ग्रासरूटस संस्था के पिछले 7–8 साल के अनुभव व सरकारी विभागों के साथ सामंज्सय बनाने के फलस्वरूप उनका ध्यान कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा किये जा रहे कार्यो की ओर आकर्षित हुआ। जोकि कुमाऊँ कारीगर समिति के लिए बढ़ी उपल्बिध के साथ–साथ एक चुनौती भी है। यह कुमाऊँ कारीगर समिति के उददेश्य के अनुसार उसके भविष्य के लिए काफी अच्छी पहल है, इससे समिति आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ सकेगी। इस वर्ष के दौरान मुख्य रूप से निम्न दो विभागो के साथ समिति द्वारा कार्य करना प्रांरभ कर दिया गया है।

1. **उत्तराखण्ड जल संस्थान** : रिसावदार कुओं के महत्व को समझते हुये दूरस्थ गॉव में पेयजल उपलब्ध कराने के लिये इस उपयुक्त तकनीकी का उत्तराखण्ड जल संस्थान के अधिकारीयों द्वारा विभिन्न गॉव में जाकर इसकी समीझा की एंव सम्बन्धित समुदाय से पानी उपलब्धता, लागत, रख–रखाव आदि पर गहन रूप से जानकारी ली। विचार विर्मश के बाद ही उत्तराखण्ड जल संस्थान द्वारा अपने पेयजल कार्यक्रम में इस तकनीकी को भी अपनाने का निर्णय लिया, और

ग्रासरूटस संस्था के माध्यम से कुमाऊँ कारीगर समिति को कुमॉऊ एंव गढ़वाल मण्डल के 7 जिलों के समस्याग्रस्त गॉव की सूची निम्नानुसार उपलब्ध कराई गई।

गढ़वाल मण्डल								
क्रम सं0	जिले	डिविजन	विकास खण्ड	संकट ग्रस्त पेयजल ग्राम की संख्या	सर्वेक्षण ग्राम की संख्या	संभावित ग्राम	असंभावित ग्राम	कार्य प्रांरभ ग्राम
1	टिहरी	टिहरी	9	49	38	25	14	10
2	पौड़ी	पौड़ी	8	15	9	6	3	4
3	रूद्रप्रयाग	रूद्रप्रयाग	2	6	6	6	—	4
		कुल	**19**	**70**	**53**	**37**	**17**	**18**
कुमाऊँ मण्डल								
1	अल्मोड़ा	अल्मोड़ा	3	11	8	7	1	5
2	अल्मोड़ा	रानीखेत	5	15	11	10	1	4
3	नैनीताल	नैनीताल	5	64	30	20	11	6
4	नैनीताल	रामनगर	1	7	5	5	—	1
5	बागेश्वर	बागेश्वर	3	15	1	1	—	1
6	पिथौरागढ़	पिथौरागढ़	9	20	—	—	—	—
		कुल	**26**	**132**	**55**	**43**	**13**	**17**
		महायोग	**45**	**202**	**108**	**80**	**30**	**35**

जल संस्थान द्वारा उपलब्ध कराई गई 202 संकट ग्रस्त ग्रामों की सूची के आधार पर 108 गॉव का सर्वेक्षण किया गया। विस्तृत सर्वेक्षण के उपरान्त 35 गॉव में (गढवाल मण्डल के 18 एंव कुमाऊँ मण्डल के 17) कार्य प्रारंभ करा दिया गया है।

2. **खादी एंव ग्रामोद्योग आयोग** : कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा पिछले सात वर्षो से वैक्लिपिक उर्जा के अर्न्तगत बायोगैस कार्यक्रम का संचालन निरन्तर करती जा रही है। इसके सकारात्मक परिणामों को देखते हुये खादी ग्रामोद्योग आयोग द्वारा कुमाऊँ कारीगर समिति को गढ़वाल मण्डल में गोबर गैस बनाने हेतु अधिकृत किया गया।

वर्ष के दौरान वैकल्पिक तकनीकि से लाभान्वित समुदाय/परिवार

क्रम सं.	जिला	ब्लाक	रिसावदार कुऑ	बायोगैस	शौचालय	बरसाती टैंक
1	अल्मोड़ा	द्वाराहाट	07	29	219	30
		ताड़ीखेत	18	14	152	28
		हवालबाग		3	15	4
		भैंसियाछाना		3	4	
		स्यालदे	3			
		लमगड़ा		1		
		धौलादेवी		3		
2	नैनीताल	रामगढ़	2	7	15	13
		भीमताल	1	22	39	31
		बेतालघाट		5	30	
		धारी		5	16	9
		कोटाबाग		30	06	
		ओखकाण्डा		1		
3	बागेश्वर	गरूड़	3	5	09	1
		बागेश्वर		1		
4	पिथौरागढ़	मुनाकोट	1	10	06	3
		बिन	1			2
		गंगोलीहाट		7	06	
5	टिहरी गढ़वाल	चम्बा	2		02	5
		नरेन्द्र नगर	1	6		1
		भिलंगना			13	
6	चमोली	देवाल	2		20	2
7	देहरादून	सहसपुर		**7**		
		विकास नगर		**15**		
	जिले 7	**ब्लाक 26**	**42**	**174**	**552**	**129**

सहयोगी सस्थाओं द्वारा उपयुक्त तकनीकि का प्रचार एवं प्रसार

कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा पिछले वर्षो के अनुभवों के आधार पर उपयुक्त तकनीकी का प्रचार ,प्रसार एवं रख रखाव हेतु कुमाऊँ एवं गढ़वाल में 14 सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर पिछले तीन वर्षो से उपरोक्त कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा अपने वरिष्ठ कारीगरों को सहयोगी संस्थाओं में प्रतिनियुक्ति पर भेजकर उन क्षेत्रों में इच्छुक नव युवकों को इस कार्यक्रम के द्वारा प्रशिक्षित किया गया। विगत वर्ष तक कुमाऊँ कारीगर समिति एंव सहयोगी संस्थाओं में 15 नये नव युवकों ने अपना प्रशिक्षिण पूर्ण कर अपने क्षेत्र में सम्बन्धित सहयोगी संस्था के माध्यम से उपयुक्त तकनीकी कार्यक्रम का प्रचार प्रसार कर अपनी आजीविका बढ़ा रहें हैं। उपरोक्त प्रयास के द्वारा इस गठबन्धन के माध्यम से निम्नलिखित कार्य किये गये हैं।

क्रम सं	सहयोगी संस्था	बायोगैस	शौचालय	रिसावदार कुआँ	बरसाती टैंक	वृक्षारोपण
1	आरोही , नैनीताल	1	4		4	
2	विमर्श , नैनीताल	22	27	1	10	
3	चेष्टा , नैनीताल	21	16		21	1000
4	सत्या , नैनीताल		10		4	600
5	राईज , अल्मोड़ा	12	10			
6	अमन , अल्मोड़ा					
7	लक्ष्मी आश्रम , अल्मोड़ा		6			
8	उमंग , अल्मोड़ा	2	52		9	2786
9	सिमार , चमोली		20	2	2	
10	सूर्या ,टेहरी गढ़वाल	7	15	4	6	
11	एडौप्ट , देहरादून	19				
12	अवनी ,पिथौरागढ़	1				
13	ग्रामीण विकास समिति, पिथौरागढ़	11	6	2	5	
	2007–08	**96**	**166**	**09**	**61**	**4,386**
	2006–07	**92**	**117**	**07**	**50**	**18,036**
	2005–06	**85**	**47**	**04**	**–**	**3,200**
	कुल	**273**	**330**	**20**	**111**	**25,622**

क्षमता विकास कार्यक्रम

ग्रामीण नवयुवको को वैकल्पिक तकनीकि में प्रशिक्षण देकर उन्हें एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में तैयार करना कुमाऊँ कारीगर समिति का एक मुख्य उउेश्य हैं, जिसके फलस्वरूप वर्तमान में 50 कारीगरों का यह समूह कार्यरत है। यह समूह विभिन्न हुनर के आधार पर एक कारीगर श्रेणी के रूप में गठित है। कुमाऊँ कारीगर समिति में बहुत से कारीगर है जिन्होने अपनी जिन्दगी की शुरूआत एक प्रशिक्षणार्थी के रूप में की थी , आज उनके पास हाथ का एक हुनर है जिससे वे अपनी अच्छी आजीविका चला रहें है, निम्न टीमो के आधार पर कार्य कर रहे है:

पेयजल एंव पर्यावरणीय स्वच्छता	–	24
वैकल्पिक उर्जा	–	17
बरसाती जल संग्रहण	–	07
जल गुणवत्ता जॉच	–	02
प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एंव सर्वधन	–	06

इस क्रम में समय–समय पर क्षमता विकास हेतु प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया जिनमें समिति के सभी सदस्यों ने भाग लेकर काफी अच्छे अनुभव प्राप्त किये। समीक्षा वर्ष के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रमों की तालिका निम्नवत है :

दिनॉक	विषय	स्थान / आयोजक	प्रतिभागी सं0
06 अप्रैल 2007	क्षमता विकास तकनीकी प्रशिक्षण	दूनू रॉय	40
09 – 26 अप्रैल 2007	बायोगैस प्रशिक्षण हिमांचल / कुमाऊँ कारीगर समिति	ग्रासरूटस एंव कुमाऊँ कारीगर समिति	12
26 अप्रैल 2007	कार्ययोजना कार्यशाला	ग्रासरूटस एंव कु0 का0 समिति, उंमग	12
24 – 25 अगस्त 2007	प्रबन्धन कार्यकारणी कार्यशाला	ग्रासरूटस एंव कु0 का0 समिति	40
27 – 31 अगस्त 2007	जल विज्ञान कार्यशाला / प्रशिक्षण	फेजल जैदी, यूनिस्को	6
01 – 18 सितम्बर 2007	हैण्डपम्प निर्माण का प्रशिक्षण एंव भवन सामग्री एंव डिजाईन	कुमाऊँ कारीगर समिति	14
24 – 25 सितम्बर 2007	भविष्य के कार्यक्रम संचालन हेतु कार्यशाला	ग्रासरूटस एंव कुमाऊँ कारीगर समिति	25
26 सितम्बर 2007	वैक्लिपिक तकनीक प्रचार–प्रसार हेतु	चिया ,नैनीताल	5
01 अक्टूबर 2007	सैड़ियों का संगठन, भवाली, बायोगैस हेतु शौक्षिणिक भ्रमण	कुमाऊँ कारीगर समिति / विर्मश	10
04– 08 अक्टूबर 2007	क्षमता विकास तकनीकी प्रशिक्षण	वी0बी0 ईशवरन, दूनु रॉय	60
25 अक्टू0– 07 नवम्बर 2007	गोबर गैस प्रशिक्षण कार्यशाला	के0वी0आई0सी0, देहरादून	14
27 नवम्बर 2007	क्षमता विकास कार्यशाला	ग्रासरूटस एंव टिम्बक टू कलेक्टिव (बबलू गांगोली)	14
10 – 11 दिसम्बर 2007	क्षमता विकास कार्यशाला	ग्रासरूटस एंव कुमाऊँ कारीगर समिति	25
04 जनवी 2008	गोबर गैस कार्यक्रम	के0वी0आई0सी0 / बायोफयूल ,देहरादून	1

संस्थागत एवं वित्तीय प्रबन्धन

समीक्षा वर्ष के दौरान कुमाऊँ कारीगर समिति को वैकल्पिक तकनीकि के प्रचार प्रसार , जल संवर्धन कार्यक्रम एवं संस्थागत क्षमता की वृद्धि का अवसर एवं चुनौती – सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट मुम्बई के वित्तीय सहयोग से प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम के सुचारू एवं सुव्यवस्थित ढंग से संचालन हेतु कुमाऊँ कारीगर समिति के वरिष्ठ सदस्यों एंव ग्रासरूटस संस्था के सहयोग से गठित प्रबन्धन समिति द्वारा बैठको का निरन्तर आयोजन किया गया जिसके माध्यम से किये गये कायक्रमो का अनुस्रवण एंव मूल्यांकन कर कार्यो की गुणवत्ता एंव संचालन की कमियों में सुधार करने का प्रयास किया जा रहा है ।

आभार

समिति वित्तीय संस्था सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट, उत्तराखण्ड शासन, ग्रासरूटस, महिला उमंग समिति एवं अन्य सहयोगी संस्थायें, दुसाद गधेरा बचाओ मंच, गधेरा बचाओ समितियॉ,महिला संगठनों, मित्रों, सभी सदस्यों, आडिटर शारदा एवं बहुगुणा तथा समस्त क्षेत्रीय जनता का आभार प्रकट करती हैं, जिनका अमूल्य सहयोग एवं मार्ग दर्शन हमें निरंतर आगे बढ़ने एवं कार्य करने की प्रेरणा देता हैं।

समिति प्रगति रिपोर्ट एक नजर में

क्रम.स	कार्यक्रम	2007–08	आज तक
1	पेयजल रिसावदार कुएँ • लाभार्थी परिवार • लाभार्थी जनसंख्या	42 840 4,620	132 3,074 18,068
2	शौचालय (लाभान्वित परिवार)	552	1457
3	बायोगैस संयंत्र (लाभान्वित परिवार)	174	542
4	बरसाती जल संग्रहण टैंक • लाभान्वित परिवार • लाभान्वित स्कूल	129 –	255 15
5	प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संवर्धन • वृक्षा रोपण (जंगली प्रजाति) • फलदार पौधरोपण • खाल • कन्टूर ट्रेन्च (मीटर) • पौधशाला	1,10,867 5,300 337 10,964 2	1,86,367 5,300 437 13,964 17
7	स्वयं सहायता समूह	–	74
8	गधेरा बचाओ समिति	01	26
9	सहयोगी संस्थाऐं	–	14

सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में किये गये व्यय का विवरण
(रूपया लाख में)

अ. उपयुक्त तकनीकि प्रोग्राम

क्रम. सं.	कार्य विवरण	समिति अंशदान	समुदाय अंशदान	कुल
1	पेयजल	28.18	4.73	32.91
2	पर्यावरणीय स्वच्छता	8.31	46.05	54.36
3	बरसाती जल सग्रहण टैंक	8.29	11.66	19.95
4	वैकल्पिक उर्जा	13.68	16.11	29.79
5	प्राकृतिक संसधानो का संरक्षण एंव सर्वधन	7.00	0.74	7.74
6	जलगुणवत्ता जाँच	0.68		0.68
	कुल	**66.14**	**79.29**	**145.43**
ब. प्रशासनिक				
1	मानदेय	6.17	–	6.17
2	कार्यालय किराया टेलीफोन, स्टेशनरी ओडिट डौक्यूमैन्टेशन	1.08 0.50 0.22 0.44	–	1.08 0.50 0.22 0.44
3	यात्रा व्यय	3.06	–	3.06
	कुल	**11.47**		**11.47**
	कुल योग (अ+ब)			

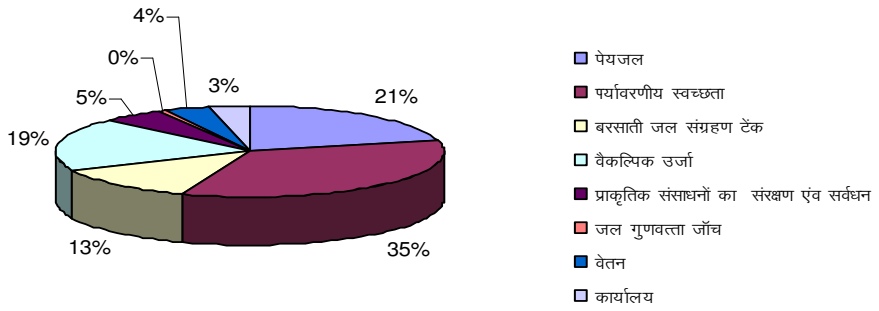

उपरोक्त कार्यक्रमों के संचालन करने हेतु कुमाऊँ कारीगर समिति द्वारा **प्रशासनिक व्यय पर 07 प्रतिशत** की लागत आई हैं।

प्रबन्ध कारिणी समिति

1.	श्री अर्जुन शाह	अध्यक्ष	रानीखेत, अल्मोड़ा
2.	श्री पूरन राम	सचिव	चोपड़ा ,नैनीताल
3.	श्री जीवन सिंह	कोषाध्यक्ष	चोपड़ा , नैनीताल
4.	कर्नल वी. पी. सिंह	सदस्य	कालिका ,अल्मोड़ा
5.	श्री कल्याण पाल	सदस्य	कालिका, अल्मोड़ा
6.	श्रीमती सुनीता कश्यप	सदस्य	कालिका ,अल्मोड़ा
7.	श्री राम सिंह रावत	सदस्य	दुभना,अल्मोड़ा

कुमाऊँ कारीगर समति

आजीवन सदस्य

क्रम. सं	सदस्यों के नाम	गॉव	जिला
1	पूरन राम	चोपड़ा	नैनीताल
2	जीवन सिंह	चोपड़ा	"
3	मोहन राम	चोपड़ा	"
4	किशन चन्द्र	चोपड़ा	"
5	नन्द किशोर	चोपड़ा	"
6	बची राम	चोपड़ा	"
7	गोपाल राम – 1	चोपड़ा	"
8	विनोद कुमार	चोपड़ा	"
9	धन सिंह	चोपड़ा	"
10	कैलाश चन्द्र	चोपड़ा	"
11	प्रकाश चन्द्र	चोपड़ा	"
12	मोहन चन्द्र	चोपड़ा	
13	गोपाल राम – 2	सिरसा	"
14	विजय सिंह	सिरसा	"
15	सुरेश लाल	सिरसा	"
16	चन्द्रन राम – 2	सिरसा	"
17	रमेश चन्द्र	सिरसा	"
18	रमेश चन्द्र दानी	सिरसा	"
19	मोहन सिंह	कूल	"
20	गोपाल राम – 1	कूल	"
21	पनी राम	कूल	"
22	महेश चन्द्र	कूल	"
23	खीमा नन्द	कूल	"
24	दिनेश चन्द्र	कूल	"

25	जीवन आर्या	कूल	"
26	डिगर राम	कूल	"
27	मोहन सिंह	कूल	"
28	सोबन सिंह	जाजर	"
29	प्रमोद कुमार – 2	छतोला	"
30	जगदीश भण्डारी	नैनीताल	
31	प्रेम बल्लभ	मलौना	अल्मोड़ा
32	महेन्द्र सिंह	मलौना	अल्मोड़ा
33	राजेन्द्र सिंह	"	"
34	चन्द्रन राम – 1	मौना	"
35	जीवन राम	"	"
36	राजेन्द्र कुमार	डोबा	"
37	जगदीश राम	दमतोला	"
38	पान सिंह	"	"
39	विरेन्द्र कुमार	"	"
40	जगदीश चन्द्र	"	"
41	खीम राम	"	"
42	आनन्द राम	"	"
43	खीमा नन्द	"	"
44	चन्दन राम	दमतोला	"
45	किशन सिंह	बनोलिया	"
46	राम सिंह	दुभना	"
47	नवीन चन्द्र	उपराड़ी	"
48	हिम्मत सिंह	मनचौड़ा	"
49	बी0 पी0 सिंह	कालिका	"
50	पान सिंह	एरोड़	"
51	हीरा सिंह	"	"
52	दर्शन सिंह	"	"
53	शंकर राम	गिनाई	"
54	महेन्द्र सिंह	बोहरागॉव	"
55	प्रमोद कुमार – 1	धमाईजर	"
56	पनी राम	पोखरी	"
57	अर्जन शाह	रानीखेत	"
58	कल्याण पौल	कालिका	"
59	सुनीता कश्यप	कालिका	"